

कक्षा में केस प्रस्तुति

1. बसंती ने 17 अक्टूबर को सुबह 8 बजकर 30 मिनट ओर 45 सेकंड पर एक लड़की को जन्म दिया। प्रसव के समय बसंती का 9 महीने 7 दिन का गर्भकाल पूरा हो चुका था। शिशु जन्म के समय जोर से रोया और 30 से. पर ठीक से साँस ले रहा था। उसका वज़न 2 कि.ग्रा. 800 ग्रा. था। आशा ने प्रसव के तुरंत बाद उसे माँ के स्तनों से लगाया और उसने ठीक से दूध पिया।

क्या शिशु अधिक खतरे वाला है ? नहीं; वह समय पूरा होने पर जन्मा है, उसका वज़न ठीक है, वह ठीक से रोया, साँस ठीक से चल रही थी और ठीक प्रकार से स्तनपान कर रहा था।

सोलहें दिन परिवार वालों ने आशा को घर बुलाया।

माँ ने बताया कि शिशु ठंडा पड़ गया है। आशा ने उसका तापमान लिया जो 93.5°फै. (34.2°सें.) था। जाँच करने पर मालूम हुआ कि उसकी छाती अंदर को धँसी थी।

क्या शिशु को सेप्सिस हो गया है ? हाँ

यदि हाँ, तो उसमें क्या लक्षण दिखाई दिए : ठंडा पड़ना (हाइपोथर्मिया) और छाती अंदर को धँसना

यदि नहीं, तो क्यों : _____

2. शकीला ने एक लड़के को जन्म दिया। उसका वज़न 2.2 कि.ग्रा. था और जन्म के समय वह साँस ठीक से नहीं ले पा रहा था। उपाय करने से उसकी साँस ठीक चलने लगी। प्रसव के तुरंत बाद आशा ने शकीला को स्तनपान कराने में मदद की।

पहले से ही शिशु ठीक से स्तनपान नहीं कर पा रहा था।

अगले 3 दिनों तक आशा ने शिशु को स्तनों से लगाने और माँ-बच्चे को सही स्थिति में रखने तथा प्रोत्साहित करने की कोशिश की। दूसरे दिन आशाने नाल पकी हुई देखी। चौथे दिन शिशु ठीक से स्तनपान करने लगा।

क्या उसे सेप्सिस (जन्तुदोष) हुआ है ? नहीं

यदि हाँ तो क्यों ? यदि नहीं तो क्यों ?

नहीं; यद्यपि दूसरे दिन शिशु की नाल पक गई थी पर उसे स्तनपान करने में जन्म से ही कठिनाई हो रही थी अतः उसे लक्षण नहीं माना जाता। दूसरे दिन केवल एक लक्षण था (नाल पकी थी)।

दूसरे दिन आप क्या करेंगी ?

नाल को साफ कपड़े और पानी से साफ करके उस पर जेन्शन वायलेट पेंट (नीली दवा) लगायी जानी चाहिए। माँ को बतायें कि दिन में 2 बार नाल पर जेन्शन वायलेट पेंट (नीली दवा) लगाएँ।

अगले दिन नाल की जाँच करें